



बाल, लॉरियल और जिलेट के बीच

बाल एक ऐसी बारीकी है जिसे समझने का लोग दिखावा करते हैं।

वे इसे स्वच्छता कहते हैं, सौंदर्य, पहचान, संस्कृति, रस्म।

असल में यह बस एक सरहद है — जो आप दिखाते हैं और जो छिपाते हैं, उसके बीच।

कोई इसे नाई के हवाले करता है, कोई ब्यूटीशियन के, कोई उन आधुनिक मशीनों के जो आत्मनिर्भरता और पूर्णता का वादा करती हैं। पर बाल वहीं रहता है, अड़ियल, एक जैविक याददिलानी: आप सामाजिक प्राणी होने से पहले एक जानवर हैं।

और फिर भी, वह दुश्मन नहीं है। वह एक असुविधाजनक दोस्त है, सफ़र का साथी, जो आपको याद दिलाता है कि आप कहाँ से आए हैं। उसका फैलाव लगभग केशिकाओं जैसा है, रंग आपके आनुवंशिक नक्शे का दिया हुआ, और एक कहानी जिसे आप मिटा नहीं सकते। जो लोग एलोपेसिया झेलते हैं, वे भी उसके बिना नहीं हैं — उन्होंने उसे बस एक ऐसे वक्त्र के लिए खोया है जिसे कोई तय नहीं कर सकता।

पर बाल को समझने के लिए आपको मूल तक लौटना होगा — वहीं, जहाँ हमेशा लौटना होता है: आदिम मनुष्य।

मैं इसकी कल्पना यूँ करता हूँ, एक प्रागैतिहासिक नुआर दृश्य में। घास की दीवार के पीछे दो आकृतियाँ बातें कर रही हैं। एक तीसरा शख्स आता है और समझ नहीं पाता कि मर्द कौन है और औरत कौन। चेहरा काफ़ी नहीं। चेहरा धोखा देता है।

तो औरत अपनी पहचान की किस्मत बदलने का फ़ैसला करती है।

वह नदी पर जाती है, पानी में खुद को देखती है, और उसे दाढ़ी दिखती है।

उसे वह अच्छी नहीं लगती। वह उसकी नुमाइंदगी नहीं करती। वह उसे अलग नहीं दिखाती।

वह एक धारदार पत्थर ढूँढ़ती है और बाल हटाने लगती है, एक-एक करके।

उसे पता चलता है कि बाल धीरे-धीरे दोबारा उगते हैं — और इससे उसे एक बढ़त मिलती है: उसे यह रस्म रोज़ दोहरानी नहीं पड़ती। और उसे इससे भी ताक़तवर एक बात पता चलती है: मर्द उसे अलग नज़र से देखता है।

फ़र्क़ आकर्षण बन जाता है।

फ़र्क़ भाषा बन जाता है।

वहीं से बालों की पूरी संस्कृति जन्म लेती है: पहले प्रतीकात्मक, फिर सामाजिक, फिर स्वच्छता की, फिर वैज्ञानिक, फिर वैचारिक।

आज के अतिवादों तक: वे जो कहते हैं कि बाल आपको जीवाणुओं से बचाते हैं और इन्हें रखना ही चाहिए; वे जो कहते हैं कि स्वीकार किए जाने के लिए इन्हें हटाना ही होगा; वे जो कहते हैं कि चाहे जाने के लिए इन्हें सँवारना ही होगा।

सच इससे सीधा है: बाल जन्म लेता है, बढ़ता है, मुड़ता है... और जिस जगह मुड़ता है, वहीं मर जाता है।

पर जड़ ज़िंदा रहती है, अड़ियल, कुछ ऐसे विचारों की तरह जिन्हें आप इच्छाशक्ति से भी नहीं उखाड़ सकते।

और फिर आखिरी नियम है, वह जिसे सिर्फ़ क्रिस्तागो जानते हैं:

बाल को कभी बवाल मत बनाओ।

फ़र्क़ ज़रा-सा है — बस एक अक्षर का।

पर वह सब कुछ बदल देता है।

फर्दिनांदो